समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018-19 **8 अ**

जैन विद्या - भाग - 8

(श्रमण-महावीर-अध्याय 1 से 46)

समय : 3 घण्टे प्रश्न पत्र : प्रथम पूर्णांक 100

नोट- पिछले कोर्स से 15 नम्बर के प्रश्न इस प्रश्न पत्र में पूछे जा सकते हैं। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) निम्न प्रश्नों के उत्तर दें- 10X3=30

1. कुमार ने घर में रहकर भी विदेह की साधना किस प्रकार शुरु की?
2. भगवान पहले ही दिन विद्यालय से मुक्त कैसे हो गये?
3. भगवान को आने वाला प्रथम उपसर्ग क्या था?
4. मेघ कुमार का मन संयम से विचलित क्यों हो गया?
5. केशी द्वारा महाव्रतों के विस्तार का कारण पूछने पर गौतम ने क्या कहा?
6. भगवान महावीर का त्रयोदशांग धर्म क्या है?
7. व्यवस्था की दृष्टि से भगवान ने अपने गणों के नेतृत्व को कितनी ईकाइयों में बांटा? वे किन आवश्यक कार्यों की व्यवस्था करते थे?
8. भगवान के किस उपदेश को सुन रोहिणेय का ज्ञान चक्षु खुल गया और वह विरक्त हो गया?
9. जमालि भगवान महावीर के संघ से अलग क्यों हो गया?
10. नौ गणधरों की शंकाए क्या-क्या थी?

(B) निम्न प्रश्नों के उत्तर दें- 5X6=30

1. अर्द्ध निद्रावस्था में देवी त्रिशला द्वारा देखी गई स्वप्न श्रृंखला में से किन्हीं पांच का वर्णन करें।
2. भगवान ने साधनाकाला में आदिवासी क्षेत्रों में जाने का संकल्प क्यों किया?
3. उत्पल के 10 स्वप्नों का अर्थ क्या था?
4. भगवान के कैवल्य प्रसंग का संक्षिप्त उल्लेख करें।
5. भगवान ने इन्द्रभूति को त्रिपदी का सिद्धान्त कैसे समझाया?

(C) निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें- 4X10=40

1. संघ बद्ध और संघ मुक्त साधना के बारे में भगवान महावीर का दृष्टिकोण क्या था?

अथवा

भगवान को आने वाले अनुकूल उपसर्गों के बारे में बताएं।

2. सेठ सुदर्शन और अर्जुनमाली के प्रसंग का उल्लेख करें।

अथवा

मैत्री के आयाम को बताएं।

3. भगवान ने कालोदयी को पंचास्तिकाय का सिद्धान्त कैसे समझाया?

अथवा

मुनि की आत्मकथा श्रेणिक के धर्म परिवर्तन की कथा बन गई। कैसे?

4. किरात सदा-सदा के लिए महावीर का सहयात्री बन गया। कैसे?

अथवा

भगवान महावीर वैयक्तिक स्वतंत्रता के महान प्रवक्ता और सामूदायिक मूल्यों के महान संस्थापक थे। समझाएं।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 **8 ब**

जैन विद्या - भाग - 8

(आचार्य भिक्षु-अध्याय 1 से 8, 10, 11)

समय : 3 घण्टे प्रश्न पत्र : द्वितीय पूर्णांक 100

नोट– पिछले कोर्स से 15 नम्बर के प्रश्न इस प्रश्न पत्र में पूछे जा सकते हैं। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) निम्न प्रश्नों के उत्तर दें– 10×3=30

1. स्वामीजी की माँ दीक्षा की आज्ञा क्यों नहीं दे रही थी? फिर वह कैसे तैयार हो गई?
2. स्वामीजी के साथ मिलकर आचार्य जयमलजी ने आचार शुद्धि के लिए जो निर्णय लिया था उसे क्यों बदल दिया?
3. स्वामीजी के परिवार का परिचय दें। वे किस सम्प्रदाय के अनुयायी थे?
4. राजनगर चातुर्मास समाप्ति पर स्वामीजी ने श्रावकों को क्या निर्णय सुनाया?
5. स्वामीजी एक निपुण गृहस्थ थे। कैसे? उन्होंने अपनी माता की क्या व्यवस्था की?
6. स्वामीजी ने किस चिंतन से संघ से संबंध विच्छेद कर अभिनिष्क्रमण का निश्चय किया?
7. स्वामीजी की अंतिम शिक्षा में कोई पाँच का उल्लेख करें।
8. 'कीकी बाई' घटना प्रसंग को संक्षिप्त में लिखें।

(B) निम्न प्रश्नों के उत्तर दें– 5×6=30

1. स्वामीजी की लोमहर्षक तपस्या की जानकारी दें।
2. स्वामीजी का जीवन पुस्तक, नदी, इक्षु सदृश था। कैसे?
3. स्वामीजी बुराई में भी भलाई खोज लेते थे। एक घटना प्रसंग से सिद्ध करें।
4. स्वामीजी के भाव संयम ग्रहण के प्रसंग का उल्लेख करें।
5. स्वामीजी का व्यक्तित्व अपराजेय था। किसी घटना का उल्लेख करें।

(C) निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें– 4×10=40

1. स्वामीजी के जन उद्धारक जीवन का सूत्रपात करने का श्रेय किस घटना को दिया जा सकता है? विस्तार से लिखें।

अथवा

स्वामीजी एक परिपूर्ण आचारनिष्ठ व्यक्ति थे। घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट

करें।

2. स्वामीजी के महाप्रस्थान की तैयारी को विस्तार से लिखें।

अथवा

स्वामीजी विरल मनुष्यों में से एक थे। स्पष्ट करें।

3. स्वामीजी को बाह्य संघर्षों से अधिकांशत: जुझना पड़ा। वे क्या थे?

अथवा

तेरापंथ की स्थापना क्यों हुयी बताते हुए इसके नामकरण की घटना का उल्लेख करें।

4. स्वामीजी को किन आन्तरिक संघर्षों से जूझना पड़ा?

अथवा

स्वामीजी मानव मन के कुशल पारखी थे। घटनाओं के माध्यम से जानकारी दें।